श्री कोठारी बन्धु शौर्य स्मृति ट्रस्ट

त्याग एवं बलिदान सदैव भारतीय संस्कृति के मूलाधार रहे हैं। इस पवित्र भूमि पर ऐसे महापुरूषों का अविर्भाव हुआ जिन्होंने मानव कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

इसी क्रम में कोठारी बन्धुओं (स्व. रामकुमार कोठारी तथा स्व. शरद कुमार कोठारी) ने अपना बलिदान राम जन्मभूमि को लेकर हिन्दू समाज के मस्तक पर सदियों से लगे हुए कलंक को मिटाने के लिए किया था। भारतीय संस्कृति के मूलाधार एवं हिन्दुओं के आराध्य भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में उनके मन्दिर के पुननिर्माण हेतु कार सेवा के आह्वान में सन् १९९० में जो जनमानस उमड़ा था उनमें कई को शासन की हठकर्मी के कारण अपनी जान गँवानी पड़ी। कारसेवा में योगदान बहुतों ने किया पर गुम्बर पर विजय पताका फहराने में श्रीराम जन्मभूमि के गौरव तथा उसकी अस्मिता की रक्षा करने में अपने जीवन का बलिदान देकर कोठारी बन्धुओं ने माहेश्वरी समाज ही नहीं पूरे भारत को सदा-सदा के लिए अविस्मरणीय प्रेरणा दी।

दिसम्बर १९९० की अपनी कोलकता बैठक में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा ने निर्णय लिया कि कोठारी बन्धुओं की बलिदान की स्मृति दीपशिखा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए ''श्री कोठारी बन्धु शौर्य स्मृति ट्रस्ट'' का गठन किया जाये और भारत की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में पंजीकृत कराकर इसको मूर्तरूप दिया।

ट्रस्ट की योजना है कि शार्य पुरस्कार राष्ट्र के एक विशिष्ट पुरस्कार के रूप में स्थापित हो तथा आवश्यकता है कि हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति में उन सबको सम्मानित करें जो विश्वबन्धुत्व, मानव रोग, राष्ट्रीय अस्मिता एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं उत्कर्ष के महत्वपूर्ण कार्य के प्रति समर्पित है।

इस पुनीत यज्ञ में आपसे सहयोग की आशा करते हैं। ट्रस्ट को प्रदत्त दान आयकर की धारा ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

पंजीकृत कार्यालय

सी.के. २५/४, चौक
वाराणसी-२२१००१